~~वैदिक संस्कृति~~

मुगल साम्राज्य

Lecture given by -

Mamta Rani

Guest Assistant Professor

Deptt. of History.

SNSRKS College, Saharsa,

Bihar.

आर्थिक सतंबंध कायम था तथा यूरोपीय उद्यमियों के माध्यम से नवीन तकनीकि का आगमन हो रहा था किन्तु कुलीन भावना इस नवीन तकनीकि की ओर आकर्षित नहीं थी। यह दूसरी बात है कि अकबर जैसे मुगल शासक तथा कुछ प्रमुख अमीर अपनी व्यक्तिगत रूची के कारण वैज्ञानिक विचार तथा कुछ विशिष्ट तकनीकियों की ओर आकर्षित हुए किन्तु वे इस आकर्षण को अपने युग का आकर्षण नहीं बना सके।

- अकबर – व्यक्तिगत तौर पर तकनीकि में रूची
- अबुल फजल को नयी दुनिया अथवा अमेरिका का ज्ञान।
- दानिश मंद खाँ ÷ यह बर्नियर का संरक्षक था तथा जैसा बर्नियर सूचित करता है कि उसे विलियम हार्वे के द्वारा प्रतिपादित रक्त परिसंचरण के सिद्धांत का ज्ञान था।
- सवाई जय सिंह ÷ थे एक प्रमुख खगोलविद् थे तथा गणित के बड़े विद्वान थे इन्होंने 5 स्थलों पर वेधशाला का निर्माण कराया।

भारत में अनेक ऐसे शिल्पी एवं कारीगर थे जो पश्चिमी उत्पादों की नकल करने में भी सक्षम थे तथा कुछ बातों का नकल करने का प्रयास किया गया। उदाहरण के लिए तोपें और बन्दूकों से लैस बड़े जहाजों का निर्माण किया गया।

क्षेत्र छीन लिया। अतः नजर मुहम्मद ने अपने पुत्र के विरुद्ध शाहजहाँ से सहायता मांगी शाहजहाँ ने नजर मुहम्मद की सहायता के लिए मुराद बख्श के अधीन एक बड़ी सेना भेजी। शाहजहाँ ने ऐसा निर्णय क्यों लिया इस संबंध में दो प्रकार के विचार देखने को मिलते हैं। प्रथम दृष्टिकोण के अनुसार, मुगल शासक अपनी मातृभूमि के प्रति आकर्षित रहे थे इसलिए शाहजहाँ सम्भवतः इस क्षेत्र पर कब्जा करना चाहता था किन्तु एक दूसरे दृष्टिकोण के अनुसार चूँकि उजबेग मुगलों के प्रतिद्वंद्वी रहे थे इसलिए उजबेगों की सहायता कर मुगल सम्भवतः अपने अहंकार को तुष्ट करना चाहते थे यह दूसरा मत ही अधिक प्रभावी दिखता है।

किन्तु मुराद बख्श के कूटनीतिक भूल के कारण मुगल बल्ख में एक अनावश्यक युद्ध में उलझ गये। सबसे बढ़कर दुखद पहलू यह रहा कि वे उसी के साथ युद्ध में उलझ गये जिसकी वे सहायता करना चाहते थे। किसी प्रकार मुगल उस उलझन से बाहर निकल सके. इस अभियान में व्यर्थ जन-धन की हानि हुई। इतना ही नहीं मुगल प्रतिष्ठा को भी धक्का लगा फिर बल्ख अभियान में मुगलों की विफलता से प्रेरित होकर सफावी साम्राज्य ने फिर एक बार कंधार पर कब्जा कर लिया। वस्तुतः 1622 में जहाँगीर के काल में ही कंधार मुगलों के हाथ से निकल गये थे किन्तु 1638 में शाहजहाँ के काल

स्थायित्व अकबर के काल में मिला। इस काल में ताम्बे, चाँदी एवं सोने की मानक मुद्रा स्थापित हुई किंतु चाँदी का सिक्का रुपया और ताम्बे का सिक्का दाम ही अधिक प्रचलित था। आबुलफजल यह सूचित करता है कि सिक्कों के ढलन के लिए राज्य द्वारा टकसाल स्थापित थे। सोने, चाँदी एवं ताम्बे की मुद्रा को ढलने के लिए क्रमशः 4, 14 और 42 टकसाल कार्यरत थे। मुद्राओं के प्रचलन के विषय में एक विदेशी यात्री विलियम हॉकिन्स का यह आकलन था कि जहाँगीर के शासन के आरम्भ में लगभग ढाई सौ करोड़ रुपये प्रचलन में थे। मुगलकालीन मुद्रा अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी सफलता यह थी कि शासन के आरम्भ से लेकर अन्त तक चाँदी की मानक मुद्रा में स्थिरता बनी रही।

विकसित मुद्रा व्यवस्था ने बैंकिंग पद्धति को भी प्रोत्साहन किया उस काल में बैंकिंग व्यवस्था का संचालन सर्राफों के अधीन होता था। सर्राफ लोगों से पैसे जमा लेते थे तथा उधार ब्याज भी देते थे फिर सर्राफ एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में मुद्रा के आवागमन की हुण्डी व्यवस्था के माध्यम से सुरक्षा भी देते थे। हुण्डी व्यवस्था एक प्रकार से आधुनिक चेक प्रणाली (ड्राफ्ट) — आधारित थी — अर्थात व्यापारी सर्राफों